आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 315 ARYA SABHA MAURITIUS *18th Aug to 31st Aug 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

CODE DE CONDUITE POUR L'ELEVATION DE L'AME

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।।

यजु० १/३

Om ! Vassoha pavitramassi shatdhāram vassoha pavitramassi sahastradhāram.
Devastvā savitā punatu vassoha pavitrena shatdhār supvā kāmadhukshaha.

Yajur Veda 1/3

Interprétation / Anushilan

C'est le troisième verset du premier chapitre du Yajur Veda sont le thème principal est la purification et l'élévation de l'âme par la dévotion.

La dévotion de la part du fidèle doit comprendre ces activités suivantes :

(i) Le Yajna (une action noble et sacrée) qui est bénéfique, par la grâce de Dieu, à des centaines ou à des milliers, voire, à toutes les créatures du monde, et à des multitudes espèces de végétation qui s'y trouvent, à la nature et à l'environnent.

(ii) L'acquisition de l'éducation et de la connaissance.

(iii) L'adoption et la mise en pratique dans sa vie des valeurs humaines telles que La vérité, la discipline, les activités physiques, le travail honnête, la spiritualité, l'intégrité, la générosité, l'esprit de partage, l'humanisme, la tolérance, le sacrifice, la magnanimité, l'humilité et autres altitudes positives.

Ce n'est que par ces activités que le fidèle peut purifier et élever son âme.

Une telle personne est bénie par le Seigneur qui lui accorde la force physique, la santé, la capacité intellectuelle, le savoir-faire, la sagesse, la clairvoyance et autres vertus de sorte que sa vie soit remplie de bonheur, et il connaitra la prospérité et la gloire.

N. Ghoorah

३ की संख्या (अंक)

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

गुण तीन होते हैं – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण
ताप ३ होते हैं - दैहिक, दैविक, भौतिक
काल ३ होते हैं – भूत, वर्तमान, भविष्यत्
दोष ३ हैं - वात, पीत, कफ़
देव भी ३ हैं - ब्रह्मा, विष्णु, महेश (ऐसी मान्यता है)
ऋण ३ ही हैं - देवऋण, पितृ-ऋण, गुरु ऋण
राम भी ३ हैं - बलराम, परशुराम और रामचन्द्र
अग्नि भी ३ हैं - वनाग्नि, बड़वाग्नि, जठराग्नि
लोक भी ३ ही हैं - अन्तरिक्ष, द्यौ और पृथ्वी
अवस्था भी तीन ही हैं - बाल्य, यौवन, बुढ़ापा (वृद्ध)
कर्म ३ हैं - संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण

श्रावणी पर्व

सावन या श्रावणी में मनाए जाने वाले वैदिक पर्व वेद का पठन-पाठन होता ही है। वेद मन्त्रोच्चारण के साथ हम आहुतियाँ डालकर यज्ञ भी करते, महायज्ञ भी होता है और कहीं कहीं मासिक यज्ञ भी होता है। और यज्ञोपवीत भी धारण करते और पुराने को बदल कर नया लेते हैं। चलें, देखें यज्ञोपवीत किस बात का द्योतक है। यज्ञोपवीत इस बात की ओर संकेत करता है कि हमारे सिर पर तीन ऋण हैं। एक पितृ-श्रृण, दूसरा गुरुऋण और तीसरा ऋषि ऋण।

अब चलें देखें यज्ञोपवीत में तीन ही धागे क्यों हैं, तीन ही तार क्यों? इसका एक वैज्ञानिक रहस्य है। हमारे यहाँ तीन की संख्या का बड़ा महत्व है। हमने इस लेख की शुरुआत में तीन की संख्या की एक तालिका दी है। हमारे जीवन के चार आश्रमों में से तीन ही आश्रमों में यज्ञपवीत धारण करते हैं, संन्यास आश्रम में नहीं। इसलिए भी इसमें तीन ही डण्ड हैं। ये हमें बताते हैं कि हमें मन, वचन और कर्म से एक होना चाहिए। जो मन में है वही बोलना चाहिए और वही करना चाहिए। इसमें संयम की भी बात आ जाती है। तीन संयम पहला शरीर का संयम - ब्रह्मचर्य संयम। दूसरा मन का संयम और तीसरा कर्म में संयम। शरीर के संयम के द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन। ब्रह्मचर्य के पालन का आशय यह नहीं कि शादी नहीं की तो ब्रह्मचारी कहलाते रहेंगे। गृहस्थ आश्रम में ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया जाता है जैसे गांधी ने दक्षिण अफ़्रीका वास के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। जबकि अपेक्षा कृत अभी जवान ही थे। वाणी संयम के द्वारा सत्य, हितकर और मधु बोलना तथा स्वाध्याय करना; और मन के संयम के द्वारा मन के विकारों को दूर करके उसे शुद्ध, पवित्र और शिवसंकल्पी बनाना और ईश्वर चिन्तन करना। यदा-कदा हम से लोग पूछा करते हैं मन तो दिखाई नहीं देता तो हम उसे शुद्ध कैसे करें। मनु महाराज का एक श्लोक है, जिससे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। यथा – **'अद्भि गात्राणि शुद्धयन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।'**

अर्थ – जल व साबुन से तन साफ़ होता है, सत्य से मन। शरीर, मन और वाणी का संयम यज्ञोपवीतधारी के लिए न केवल अति आवश्यक है वरन् अनिवार्य है।

इसलिए वेद में यह मंत्र आया है।

ओं यज्ञोपवीतं परम पवित्रं - प्रज्ञोपतेर्यम् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यम प्रच प्रति मुञ्च शुभ्रमं यज्ञपज्ञपवितः बलमस्तु तेजः ।
यज्ञोपवीतमति यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यमि ।।

सम्पादकीय

प्रभु उपासना

उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना अर्थात् उसके ध्यान में मग्न रहना। अपने आस पास परमेश्वर को अनुभव करना। उसके गुण, कर्म एवं स्वभावादि का चिन्तन मनन करना। शुद्ध उपासना से ही परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। मोक्ष-प्राप्ति का प्रमुख उपाय उपासना ही है।

मोक्ष प्राप्त करना मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। ईश्वर के ध्यान, उपासना, भक्ति तथा योगाभ्यास से ही उसका दर्शन संभव हो सकता है। जब तक जीव अपने मोक्ष-धाम को प्राप्त नहीं करता है, तब तक उसे भौतिक बन्धनों से छुटकारा नहीं मिलता है। वह आवागमन के चक्र में फंसा रहता है ।

दुनिया में हमेशा साथ रहने वाला हमारा साथी परमात्मा ही है। वह हर व्यक्ति को प्रत्येक स्थान पर, हर समय उपलब्ध है। हम उसे चारों तरफ़ खोज रहे हैं और हमें पता ही नहीं है कि वह हमारे निकट ही है। हम योग-साधना के बिना उसका दर्शन नहीं कर पाते हैं । किसी कवि ने कहा भी है –

हर जगह मौजूद है, पर वह नज़र आता नहीं ।
योगसाधना के बिना, उसको कोई पाता नहीं ।।

उपासना में उपास्य देव के गुणों और स्वरूप का चिन्तन तथा ध्यान किया जाता है। परमेश्वर के गुणों, कर्मों और स्वभावों के सदृश अपने गुण, कर्म और स्वभाव बनाना तथा उन्हीं गुण-कर्मों को अपने अन्दर लाने का पूरा प्रयास करना सच्ची उपासना कहलाता है। प्रभु दयालु है तो हमें भी अपने अन्दर दयालुता का भाव लाना चाहिए। ईश्वर ज्ञान स्वरूप है तो हमें भी ज्ञानी बनना चाहिए। जगदीश्वर परोपकारी है तो हमें भी परोपकार करते रहना चाहिए। वैदिक उपासना तो क्रियात्मक है। जो हम वाणी से बोलते हैं, वह आचरण में दिखाई देना चाहिए।

वास्तव में उपासना करने का मतलब है कि हमारी आत्मा जाग उठे। हम पाप, अधर्म और बुराइयों से घृणा करने लगे और सम्मार्ग की ओर चल पड़े। प्रभु की उपासना न करने से व्यक्ति अपराधी बन जाता है। इसीलिए आत्मिक उन्नति के लिए ईश्वर की सच्ची उपासना करने का विधान है।

परमात्मा आनन्द का भण्डारी है और आत्मा आनन्द का भिखारी है। दुखों से छूटना और ईश्वर के परमानन्द को प्राप्त करना जीवात्मा का उद्देश्य है। ऐसा वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि सभी धर्म ग्रन्थ कहते हैं। अतः हमें भौतिक सुख-भोग प्राप्त करते हुए आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्ति के लिए ईश्वर की शुद्ध उपासना, प्रार्थना और स्तुति निरन्तर अपने पवित्र आत्मा द्वारा करना चाहिए ताकि हम मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होते रहे ।

बालचन्द तानाकूर

Vedas and Vedanta, Concepts and Misunderstandings

Prof. Soodursun Jugessur, (Dharma Bhushan, Arya Bhushan)

Introduction : There are many misunderstandings that have cropped up in the interpretation of Vedas and the Vedanta, the latter a doctrine propounded by Adi Shankaracharya and his followers ever since the time of Gautama Buddha. Such misunderstandings have invariably impacted on the minds of Hindus. Reformers have come to bring back the pristine purity of the Vedas, with some success. But the bulk of the work remains.

I have, through a series of six short articles to come, tried to dispel some misconceptions for the better advancement of the people, especially in the light of modern developments where youths are exposed to a worldwide view of what they face and what they see as reality. I leave it to the readers to use their intellect to choose what is wrong and what is right.

1. Origins of Vedas and Vedanta

Vedas and Vedanta form the bedrock of Hindu philosophy and religion. Many people are unaware of the origins, philosophical and social implications of the Vedas and the Vedanta, and tend to confuse one with the other. A close study is necessary to appreciate their philosophical impact on Hindus and their outlook towards life. The Vedas are claimed to be of divine origin and revealed to Rishis or seers, while the Vedanta is grounded on the teachings of the Upanishads and more recent literature that are of human origin. Etymologically, Vedanta means the end of the Vedas, and includes the **Upanishads, Brahma-Sutras and the Gita** and other fairly recent literature, as compared to the Vedas that date back to at least five thousand years before Christian era, or even much more. It is generally accepted that the four Vedas (Rig, Yajur, Sama, and Atharva) were revealed by God to Rishis Agni, Vayu, Aditya and Angira, respectively, at the very early stages of human development as we evolved as cultured beings, ready to receive spiritual and temporal knowledge for our guidance.

cont. on pg 4

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

श्रावणी यज्ञ - स्वर्ण जयन्ती

आज से ठीक पचास वर्ष पहले भारत से आये हुए संन्यासी स्वामी अखिलानन्द द्वारा शुरू किया गया था श्रावणी यज्ञ का अनुष्ठान। इसी लिए उसे हम श्रावणी उपाकर्म के नाम से जानते और मानते आ रहे हैं। उसी की स्वर्ण जयन्ती मनाने के लिए त्रिओले तीन बुतिक आर्यसमाज ने आर्य सभा के तत्वावधान में ५ दिवसीय यजुर्वेदीय महायज्ञ का आयोजन किया था। बुधवार ता० १२ से रविवार ता० १६.०८.१५ । सप्ताह के दिन सायंकाल ३.०० बजे से ५.४५ तक और रविवार १६.०८.१५ को प्रातः ९.०० से ११.०० बजे तक। पूर्णाहुति के बाद सभी उपस्थित जनों को भोजन से सत्कार किया गया।

मुझे पूर्णाहुति में सम्मिलित होने का मौका मिला। उसी अवसर पर इलाके के मंत्री - माननीय सुदेश सत्काम कालीचर्ण जी, पी.पी.एस. सर्वानन्द रामकौन और राष्ट्रीय सभा सांसद सदस्य माननीय संजीव तिलकधारी उपस्थित थे।

रोश तेर आर्य मंदिर

रोशतेर आर्य मंदिर का जीर्णोद्धार करके रविवार ता० १६.०८.१५ को पुनः खोला गया। उसके लिए एक समारोह रखा गया था। सुबह ९.०० बजे पं० मधु द्वारा यज्ञ हुआ। उसमें भाग लेने के लिए गाँव के आर्य बन्धुओं को आमंत्रित किया गया था। यज्ञ के दौरान सुन्दर आर्य मंदिर श्रद्धालु लोगों से खचाखच भर गया। यज्ञ के बाद समाज की सदस्याओं द्वारा भजन-कीर्तन किये गये जिससे भक्ति भाव का समाँ बंध गया। इलाके नं० ६ के सरकारी मंत्री माननीय आसीत गंगा, माननीय संगीत फौधार और माननीय सुदेश रघुबर उपस्थित थे। आर्य सभा का प्रतिनिधित्व उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम, अन्तरंग सदस्य गिरजानन्द तिलक और बहन सती रामफल ने किया।

समारोह के बाद सभी लोगों को महाप्रसाद परोसा गया ।

२३ वाँ राष्ट्रीय आर्य युवा दिवस एवं ६८ वीं वर्षगाँठ भारतीय स्वतन्त्रता की मनाई गई पिछले शनिवार १५ अगस्त, २०१५ को रामावतार हॉल, सें पियेर में । मोरिशस के नवों जिलों के युवक प्रतिनिधि उपस्थित थे। गणमान्य लोगों में थे मौके का मुख्य अतिथि शिक्षा मन्त्री माननीय लीला देवी दुखन-लक्ष्मण, विशेष अतिथि भारतीय उच्चायुक्त श्री अनुपकुमार मुद्गल और द्वितीय सचिव श्रीमती नूतन पाण्डे, खेल-कूद मन्त्री योगिदा सोर्मिनादेन, आर्यसभा के लगभग सभी अन्तरंग सदस्यगण ।

भाषण विशेष कर दोनों मन्त्रियों और माननीय मुद्गल जी द्वारा हुए, जो एक से एक बढ़कर था। भारतीय उच्चायुक्त ने कहा कि चाणक्य ने कहा था कि पिछली पीढ़ी को देखना है अगली पीढ़ी को क्या देना चाहिए। अगर जो उन्हें प्राप्त हुआ वहीं देंगे तो कुछ प्रगति नहीं होगी । पीढ़ी दर पीढ़ी संसार को, मानव जीवन को बेहतर बनाना चाहिए। इसी विचार में अपना विचार जोड़ते हुए खेलकूद मंत्री ने कहा हमें कभी यकीन नहीं होता कि १३४ साल पहले जो लोग कुली के रूप में गन्नों के खेतों में काम करने के आए उनकी संतानों ने देश को चलाने लायक बन गए। शिक्षा मंत्री ने आदतानुसार बहुत बढ़िया भाषण दिया जिस प्रकार हम आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में हम आगे बढ़ रहे हैं उसी प्रकार हमें मानव मूल्यों को भी सुरक्षित रखना है।

विविध क्षेत्रों में जो प्रतियोगिताएँ हुई थीं उन सभी में अव्वल आए हुए प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

अन्त में प्रो० जगेसर ने याद दिलाया कि आज जो युवक संघ है उससे वर्षों पहले मोहनलाल मोहित जी ने आर्य युवक संघ को स्थापित किया था तो पहला प्रधान डा० हरिदत्त घूरा को बनाया गया था और उसके बाद उन्हें ही प्रधान पद सोंपा गया था और आज केवल वही जीवित है।

श्रावणी प्रतिपदा

श्रावणी भजन

यह श्रावणी पर्व हमारा है, यह पावन है अति प्यारा है ।
सद् ग्रन्थ व वेद पठन-पाठन, श्रवण का समय सुनहरा है ।

१. हम यज्ञ करें, सत्संग करें, परमेश्वर का गुणगान करें ।
हर समाज और घर-घर में, हम वेदों पर व्याख्यान करें ।
यह श्रावणी पर्व हमारा है .....

२. स्वाध्याय करें न प्रमाद करें, चहूँ ओर से अर्जन ज्ञान करें ।
पर याद रहे यह बात सदा, नहीं भूल कभी अभिमान करें ।
यह श्रावणी पर्व हमारा है .....

३. हम दीन-दुखी व अनाथों की, सेवा में कुछ तो दान करें ।
जितने हैं यहाँ भूले-भटके, उनपर भी हम एहसान करें ।
यह श्रावणी पर्व हमारा है .....

४. सत्कर्म करें न अधर्म करें, इस जीवन उत्थान करें ।
यह श्रावणी पर्व मनाते हुए, एक दूजे का सम्मान करें ।
यह श्रावणी पर्व हमारा है .....

मानव हो तो मानव में भेद ना समझ ।
वेद पढ़ के सबकी वेदना समझ ।।
चित में परम चैतन्य की चेतना समझ ।
हृदय के प्रेम में उसकी प्रेरणा समझ ।।

साभार पं० ग० चतुरी

देव दयानन्द जी से क्या मिला ?

पंडित राजमन रामसाहा

स्वामीजी के धरती पर आने से पहले भारत में वेद और वेद-ज्ञान छुप चुके थे, वे वेदों को माध्यम बनाकर मानव समाज का उद्धार करने आए थे। संसार भर में वेदों की छाया में रहकर आज हिन्दुत्व अमर है, हिन्दुत्व ही आर्यत्व कहलाता है। स्वामीजी ने वेद ज्ञान को फैलाया। हिन्दुओं में आर्यत्व आने लगा और विश्वभर में हिन्दुत्व सम्मानित होने लगा। आर्यत्व को फ़िर से प्रयोग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्वामी जी से पूर्व लोग वेदों का नाम तो लेते थे, पर उसपर अमल कर नहीं पाते थे। क्योंकि वेद ईश्वरीय भाषा में थे। पूर्व के लोगों ने मनमानी ढंग से ऐसी ऐसी व्याख्याएँ कर डाली थीं, जिनको मानना अच्छा नहीं लगता था। वेदों का नाम तो लेते थे, अधिकतर लोग उसके ज्ञान को जीवन में उतार नहीं पाते थे। अनेकों ने वेद पर अनर्गल बातें फैला रखी थीं। कितने लोग उसके अशुद्ध अर्थ करके उसे अनुपयोगी बना चुके थे।

स्वामी जी ने परमात्मा के इस पवित्र वेद-ज्ञान की पवित्रता को समाज के सामने उद्घाटित किया। आज शिक्षा के क्षेत्र में वेद पाठ्यक्रम में आ सका। लोग मान सके कि हिन्दू जन वैदिक सभ्यता से निकले हुए हैं। वैसे बहुत से लोग वेदों को प्राचीन ऋषियों की रचना मानने लगे रहते हैं। वेदों के विषय में ऐसी मान्यता सदा से है। स्वामीजी ने हमें बताया कि श्रुति माध्यम से हमारे प्रथम आए हुए पूर्वजों अर्थात् पितरों को परमात्मा ने वेद मन्त्र सुनाया, जो लोग उन मन्त्रों के भावों को समझने वाले हुए, वे ऋषि कहलाए।

उनके कर्म वेद को अपौरुषेय होने के प्रमाण बने। उन्होंने ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक की परिपाटी अपनाई। मानव की रचना अर्थात् ऋषियों के रचे मन्त्रों का संकलन वेद होने की मान्यता के कारण वेदों की बड़ी दुर्दशा हुई थी। वेदों के प्रादुर्भाव काल से ही उस पर अमल करने वाले और स्वतन्त्र जीने वाले लोग हुए हैं।

बाद में वेद के प्रति आदर न रखकर अपनी इच्छा का जीवन बिताने वाले अनार्य कहलाए। वेद मानने वाले आस्तिक होते थे। वे वेद को अपौरुषेय मानते थे। ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के बोलने पर वेदों का प्रकट होना हुआ।

दयानन्द स्वामीजी के इस युग में आने पर हमें यह ज्ञान मिला कि मनु महाराज जो वैवस्वत मनु के प्रथम पुरुष थे उन्हें भी वेद आता था। वेद ज्ञान प्रलय काल में सूर्य देवता की किरणों में समा जाता है। जब ईश्वर दूसरी सृष्टि करता है तब वही वेद सृष्टि के आदि में मानवों के प्रकट होने के साथ व्यक्त होता है। मुक्तात्माएँ वैदिक-ज्ञान को लेकर पूर्ण मानव बनकर धरती पर उतरती हैं।

इसी वेद ज्ञान के साथ धरती पर आने वाले सभी प्रथम मानव ज्ञान और वाणी लेकर उतरते हैं। धरती पर प्रथम आए हुए मानव समाज भाषा और ज्ञान से संयुक्त होते हैं। इस बात को मानने में तनिक सा परिश्रम करना नहीं पड़ता है कारण ईश्वर ने जितने प्रकार के जीवों को मनुष्य से पहले धरती पर उतारा वे अपने अपने स्वरूप में अपनी अपनी वाणी से पूर्ण आए और आज तक बराबर बने हैं फिर उन्होंने सिर्फ मनुष्य को ही जंगली नहीं भेजा। उन्हें भी पूर्ण बनाया। जैसे मानष्य को पूर्ण आदि में बनाया। वह आज तक वैसे ही पूर्ण बने रहने के लिए परिश्रम करते रहते हैं।

सदा से परमात्मा को मानने वाले ही मनुष्य कहलाते आए हैं। वेद के न मानने वाले अज्ञानी जन सदा से अनार्य ही कहलाते आ रहे हैं। इसका हम थोड़ा ऐसा भी अभिप्राय ले सकते हैं कि वेद के न मानने वाले लोग वैदिकों को देख देखकर मनमानी रूप से भगवान मानने भी लगे और अपने ही ढंग से सही और सभ्य भी बन गए।

स्वामी दयानन्द जी पहले यह प्रश्न लगभग नहीं उठता था कि यह मनुष्य धरती पर कब उतरा? आज लोग बता सके कि वैवस्वत मनु प्रथम मानव समाज को लेकर इस सृष्टि में उतरे। वेद ज्ञान मनुष्य से सम्बन्धित है, अतः वह प्रथम मानव समाज हमारे प्रथम आदरणीय देव या पितर हैं। वे मानव उसी तरह से पूर्ण थे, जैसे हर किस्म के जीव जब से बने हैं, वे आज तक अपने में पूर्ण हैं ।

सत्य को मानना और न मानना सभी जीवों में बराबर है। जो जीव अपने गिरोह की बात मानता है, साथ देता है, और जो नहीं मानना चाहता है, गिरोह से हट जाता है। मनुष्य में यह बात अधिक सम्भव हुई, कारण यह समाज अकेले अकेले में बहुत ज्यादा सोचते रहना पसन्द करता है। इससे मानने और न मानने का रंज इस में आना स्वाभाविक है।

हमारा सिद्धान्त है कि ईश्वर ने हमें कर्म करने की स्वतन्त्रता दी है। हम जैसा करते हैं वैसा फल पाते हैं। वेदानुकूल जीने वाले आर्य कहलाने लगे। ईश्वर ने आर्यों को धरती चलाने का भार दे दिया। वेद न मानने वाले उस अधिकार को छीनने में लग गए।

भारतीय मानव समाज जो कभी वेद-ज्ञान के बल पर जगत-गुरु तक पद प्राप्त था, हज़ारों वर्षों से मनमाने सिद्धान्तों को अपना कर पवित्र होने की वजाय दूषित होने लगा था। मनुष्य अपने चरित्र अर्थात् व्यवहार करने और सोचने के तरीकों के कारण पवित्र और अपवित्र होते हैं ।

आदि मानव-सृष्टि से महाभारत-काल तक लगभग भारत की जनता वेदानुकूल जीते आए थे। महायुद्ध के पश्चात् लोग वैदिक विद्वानों के कम पड़ने पर मन-मानी विद्वानों का अर्थात् गुरुओं का बनना प्रारम्भ हो गया था, भगवान् कृष्ण जी महाराज जो स्वयं वेद मत सम्पोषक थे, लोग उनके नाम पर अवैदिक प्रचार करने लगे।

समय के बीतने पर वेद व्यास जी के द्वारा सुरक्षित वेद को भी दूषित करने से लोग पीछे नहीं हटे। पवित्र वेद के दूषित हो जाने से महावीर जैन और भगवान् बुद्ध को आना पड़ा। उन लोगों ने सभी अच्छे काम करने के नाम पर अपने ही को सर्वासर्वा बनाकर वेद को त्याग देने का मार्ग प्रशस्त कर लिया।

यदि महर्षि देव दयानन्द जी नहीं आते, तो पुनः वेदों को अपौरुषेय होना मुश्किल था। इस देन को आर्य बन्धु सम्भालकर रखने वाला बने ।

PARENTS and STUDENTS !!! STOP PAYING FOR MASSIVE TUITION FEES

TAKE ADVANTAGE FROM OUR SOCIO-EDUCATIONAL PROGRAMME

WE USE A WIDE RANGE OF EDUCATIONAL RESOURCES AND EXPERTISE TO PROVIDE QUALITY TUITION TO YOUR CHILD , TRY US AND SEE THE DIFFERENCE

For All Primary & Secondary Classes)-Std I to HSC

TUITION available in all Subjects
"Take as many tuitions in as many subjects you want for free"

- Tuitions given by teachers with over 30 years of Teaching Experience
- Adult Classes also available
- Full coaching for those preparing privately for SC and HSC Exams
- Flexible Time & Individual Attention
- Education Programmes for young people
- Strict Discipline in Coaching
- Evening, Week-end and Holiday Schooling with OUTDOOR EDUCATION/ EDUCATIONAL TOURS & EDUCATIONAL CAMPS
- Personality Development and Value Based
- Unlimited Access to Computer Lab
- Free and Unlimited Internet Access
- Free and Unlimited Access to our Library

VENUE: PAILLES JOIN NOW – 286 6681, 59107272, 52549498

"FREE TUITION" is a social programme run by the Arya Sabha Mauritius in collaboration with the Pailles Educational Centre as one of their aims – "Education for all"
Note: A monthly fee of Rs 500 is applicable so as to help us cover on running costs.

Learn COMPUTER at very low price

Computer Course Programme for all

No age limit – for everyone and anyone

Become Computer Literate and obtain a job easily

Obtain a **MQA Recognised** Certificate after completion

Flexible Coaching & Individual Attention

Unlimited Access to Computer Lab

Free and Unlimited Internet Access

Free and Unlimited Access to our Library

VENUE: PAILLES

Register now – 2866681, 59107272, 52549498

COURSE FEE: Whole Package at only RS 500

RDI

Microsoft

Informatik pu tou dimoun
Apran computer dan 1 mois
Pou Seulment: Rs500
a certificate will be awarded by RDI
Call Now On: 2866681

Register NOW **MQA Approved**

आर्य समाज और नारी उत्थान

लक्ष्मी जयपोल

आर्य समाज की स्थापना अठारह सौ पचहत्तर में हुई थी। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। इस समाज का प्रतीक ओ३म है और गुरु-शिष्य परम्परा इस समाज का उत्पाद है। (आर्य समाज एवं नारी उत्थान के पहलुओं को प्रस्तुत किया जा रहा है।)

स्वामी दयानंद जी ने आर्य समाज के लिए दस नियम बनाए हैं। वेदों और वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद को पढ़ना-पढ़ाना,सीखना-सिखाना एवं प्रचार-प्रसार करना सभी आर्यों का परम धर्म होता था। महर्षि दयानन्द को टंकारा का सर्वप्रिय दिव्य-सितारा माना गया है।उन्हें महामानव कहा जाता है। वे आधुनिक भारत के उद्धारक एवं सक्रिय समाज सुधारक थे। वे भारत के वरदपुत्र थे। वे सच्चे देशभक्त थे। महर्षि दयानन्द गुणसम्पन्न, महात्यागी, महाप्रतापी, विद्याप्रेमी, कर्तव्यपरायण एवं बुध्दिजीवी थे। वे अहिंसा के हिमायती थे और सत्य के पुजारी थे। उन्होंने वैदिक धर्म का पुनरुत्थान किया। वे एक बड़े कर्मयोगी थे।

नारी को चार दीवारी में कैद रखी जाती थी। उनका मुख्य काम परिवार को सम्भालना माना जाता था। वह पति की सेवा एवं घरेलू काम में व्यस्त रहती थी। उन्हें शिक्षा, न्याय एवं अधिकार से वंचित रखा जाता था। नारी को द्वितीय कोटि का नागरिक कहा जाता था। वे तरह-तरह के अत्याचार सहती थीं और उनका शोषण भी किया जाता था। महर्षि दयानन्द जी नारी जाति के उद्धारक थे और उनके पक्षधर थे। उन्होंने मानव जाति को अंधविश्रास के अन्धेरे से बचाया। महर्षि जी ने बाल-विवाह का उन्मूलन भी किया। विधवाओं का पुनर्विवाह करवाया एवं विधवा आश्रम भी खुलवाए।

शूद्र एवं नारी जाति को वैदिक शास्त्र सीखने का अधिकार दिलवाया क्योंकि उस समय ऐसा माना जाता था कि इनको पुस्तक छूने से इन्हें चमड़े की बीमारी होती थी। नारी को दहेज-प्रथा एवं पर्दा-प्रथा से मुक्त करवाया। कन्याओं की हत्या की जाती थी और एक कन्या को, अधिक उम्र के एक पुरुष से शादी करने को विवश करते थे। उनका भविष्य नष्ट हो जाता था। महर्षि जी ने जातिवाद को मिटाया और नारी का उत्थान किया। कन्या पाठशाला एवं स्कूल की स्थापना भी की। नारी को शिक्षित करवाया ताकि वे आत्मनिर्भर हो सके, ताकि नारी समाज सेविका बनकर अपने परिवार की रक्षा करती रहे। शिक्षा के माध्यम से नारी को सच्चा मार्गदर्शन मिला और वे सत्कर्म की ओर बढ़ी। उन्हें पुनर्सम्मान भी मिला और उनके जीवन सकारात्मक एवं सार्थक सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द ने सती प्रथा को भी मिटाया। सती प्रथा में एक विधवा को उन के पति की चिता पर भी जबरदस्ती जलाया जाता था। उन्हें अपनी पैतृक सम्पति विरासत से वंचित रखा जाता था। नारी को समाज का शाप माना जाता था। आज आर्य समाज के प्रचार प्रसार से वे परिवार के सशक्त स्तम्भ मानी जाती हैं और उनकी भूमिका विस्तृत हो गई है। वे स्वयं अपना निर्णय लेती हैं और अपनी ज़िम्मेदारियों को सम्भालती हैं। कहते है कि **"शिक्षा दृढ़ता एवं सफलता की कुँजी होती है।"** वे उच्च पद पर आसीन हैं। आज वे सभी क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

हिन्दी सेविका धनवन्ती राजकुमार का निधन

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, मान्य प्रधान, रिव्येर जी राँपार आर्य ज़िला परिषद

बड़े दुख के साथ लिखना पड़ता है कि उत्तर प्रान्त गुडलेन्स की निवासिनी कर्मठ हिन्दी सेविका धनवन्ती राजकुमार का निधन बुधवार ६ मई २०१५ को ६८ वर्ष की आयु में हो गया। धनवन्ती जी का जीवन हिन्दी पढ़ने-पढाने में बीता। हिन्दी के लिए उसके जैसे त्यागी गुडलेंस प्रान्त में शायद ही कोई हो। हिन्दी शिक्षण, यज्ञ-हवन, सत्संग सब में वे पारंगत थीं। धनवन्ती जी अस्पताल में सेविका (servant) के रूप में काम करती थी। अवकाश ग्रहण कर चुकी थीं। वे अविवाहिता थीं।

गुडलेन्स में देवचन्द नाथू नाम के एक कर्मठ व्यक्ति थे। हिन्दी के शिक्षण, हिन्दी के उत्थान के लिए उस समय से अपने को समर्पित किया था। जब उधर के लोग कम हिन्दी पढ़ते थे। आज जहाँ आर्य मंदिर गुडलैंस स्थित है वहीं पेड़ के नीचे विद्यार्थी-विद्यार्थिनियों को वे पढ़ाते थे। उन विद्यार्थियों में धनवन्ती राजकुमार भी थीं। बाद में वहाँ आर्य मंदिर बना। प्रारम्भ में आर्य सभा द्वारा जब विद्या विनोद, विद्या रत्न, विद्या विशारद आदि की परीक्षाएँ होने लगीं तो नाथू जी अपने शिष्य-शिष्याओं को उन परीक्षाओं में भाग लेने के लिए तैयार करते थे और उन परीक्षाओं में भाग लेने के लिए साथ ले जाते थे। नाथू जी एक बड़े गीतकार थे। धन्वन्ती राजकुमार ने भी धार्मिक परीक्षाओं में भाग लिया और खुद आर्य मंदिर में पढ़ाने लगीं तो छात्र-छात्राओं को उन परीक्षाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करतीं और उन्हें परीक्षाओं में भाग लेने के लिए भेजतीं। ऐसे अनेक छात्र-छात्राएँ हुए जो उन परीक्षाओं में सफल हुए और धार्मिक ज्ञान अर्जित किया।

धनवन्ती राजकुमार को मैं ५० सालों से जानता हूँ। मैं उन्हें एक हिन्दी प्रचारिका, धर्म प्रचारिका और एक कर्मठ सेविका के रूप में जानता हूँ। ५० सालों से मैं उत्तर प्रान्त की सभी सायंकालीन पाठशालाओं में निरीक्षण एवं परीक्षण कार्य करता आ रहा हूँ। धनवन्ती मेरे संपर्क में रहीं। वे बड़ी श्रद्धा से बच्चों को पढ़ाती थीं और धार्मिक ज्ञान देती थीं। संध्या सिखाती थीं और हवन शुक्रवार के दिन करती थीं तो सब बच्चों को भाग लेने को प्रोत्साहित करती। पाठशाला में हमेशा वे उपस्थित रहती थीं और बच्चों का बहुत ख्याल रखती थीं। गाँव व परिवार में कहीं मृत्यु हो जाए तो वे जातीं और रामायण पाठ करतीं और संतप्त परिवार को धैर्य बजाती करती थीं।

निरीक्षक और परीक्षक के नाते मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ । जब भी छठी कक्षा की परीक्षा का आयोजन होता था तो भवन माँगने, कक्षाएँ तैयार करने में पूरी सहायता करती थीं। हिन्दी सेवा में ही स्कूल के प्रांगण में मूर्छित गिरने पर उनका प्राण-पखेरू कुछ दिनों बाद उड़ गया ।

मैं रिव्येर जी राँपार आर्य ज़िला परिषद का मान्य प्रधान हूँ। खुद मैंने कमिटि में प्रस्ताव रखा था कि धनवन्ती राजकुमार की लम्बी और सच्ची हिन्दी सेवा के लिए दीवाली के अवसर पर आर्य सभा द्वारा उन्हें सम्मानित किया जाए । कमिटि ने मेरी माँग को स्वीकार किया था और आर्य सभा पोर्ट लुई में धनवन्ती राजकुमार को आर्य सभा द्वारा सम्मानित किया गया था।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576

Deepest Sympathy

We deeply regret the departure of the close relatives of the respective Educators :

Younger brother of Mr S. Hanuman-thadu and mother of Mrs C. Seebun.

May their soul rest in peace.

D.A.V. College Morcellement, St. Andre
Management & Staff

DISCOURSE ON SATYARTH PRAKASH AT ILOT ARYA SAMAJ

Sookraj Bissessur (B.A. Hons)

"I read the book Satyarth Prakash early in my life. I have been reading it on and often even today. Each time I read, I find something new and innovating in it to chew, to meditate upon. I find something to digest, to make it a part of my life".

(Swami Anand Bodh Saraswati)
(Ramgopal Shalwale)

In the Wake of Satyarth Prakash Month/ Jayanti, under the aegis of Arya Sabha Mauritius, a discourse on Satyarth Prakash was delivered by Dr Jaychand Lallbeeharry at the seat of Ilot Arya Samaj-Branch No.20 (Pamplemousses) on 23rd June 2015, in the afternoon. This religious function which is an annual feature, marked with immense zeal and considerable enthusiasm, also accompanied by wide spiritual gusto, was performed and presented under the Presidentship of our dynamic –Dr. Jaychand Lallbeeharry, who was also the Master of ceremonies. The entire atmosphere was charged with spiritual vibration..

Pandit Sohur performed the Yajna. The hall was fully packed to capacity with both children and adults.

At the very outset, emphasizing upon the significance and importance of reading Satyarth Prakash, Dr. Jaychand Lallbeeharry pointed out that this very month is marked by the performance of "Yajnas", "Satsanghs", talks and discourses in which the Vedic Hymns are explained and expounded, most especially from the chapters of Satyarth Prakash, in a pious atmosphere.

Dr. J. Lallbeeharry further pointed out that as a Reformer of human life and society in all its aspects –Social, Cultural, Political and Spiritual, Maharshi Dayanand Saraswatee stands unique and unparalleled in history. Besides, being the greatest Social Preceptor of the Vedas of modern times, he was also a prominent and prolific writer. He has written dozens of books amongst which Satyarth Prakash in his masterpiece. Critics proclaim it as his 'Magnum Opus' and qualify it as the Encyclopedia of religions and universal human values.

In the same vein -- Dr J. Lallbeeharry also emphasized upon the huge significance of Chapter (2) & Chapter (6) of Satyarth Prakash. Chapter (2) teaches us that in order to become a good and industrious scholar, one must have three excellent and trustworthy guides – viz:- father, mother and preceptor. Blessed is the entire family; most lucky and fortunate is the child, whose parents are godly, well-educated and learned. Even towards servants their attitude and behaviour must be irreproachable. Chapter (6) emphasizes upon the rulers of a country- how to rule and govern. There must be rulers- strongly connected and associated with three important assemblies:- Religious, Legislative and Educational. It should be also noted that in the context of good governance, the law is the real king. It cannot be administered by any ignorant and unjust person.

Expressing his huge concern and strong devotion in highlighting the precious values of the main contents of Satyarth Prakash, Pandit Sohur opined that free from all rifts, conflicts and confrontations, religions and otherwise, Swami ji in the Satyarth Prakash also spelt out how Vedic Dharma is the sole spiritual guide that satisfies the pre-eminent needs of the hour. In addition Pandit Sohur said that Swami Dayanand's major, immortal and spiritual realization of "Satyarth Prakash", the very source from which we are promoting, propagating and promulgating the Vedic ideology in all parts of the world, including Mauritius and the Arya Samaj Movement, has been so far quite successful and is still going strong.

Ultimately, after a few devotional songs, Mr R. Lallbeeharry thanked all those present for their attention and active participation.

To conclude the ceremony Mr Dhaneswar Rummun –Secretary of Ilot Arya Samaj, laid emphasis upon the fact that the month of June, which is being observed as the month of Satyarth Prakash, is a period when we should all endeavor to read, scrutinize and understand, the very essence of Vedic teachings (through Satyarth Prakash), so that we may be able to live the Vedic way of life with a great sense of rationalism and pragmatism.

On the occasion of my 80th Birthday

Remembering my long dedicaton to Arya Sabha

Dr Indradev Bholah Indranath

On 9th September 2015 is my 80thbirthday.

"Every man has a lurking wish to appear considerable in the world" has said Johnson. Attaining 80years of long age is indeed a boon from God. I kneel before God for having given me so long and healthy life. "But there should be a limit even to the means of keeping ourselves alive" refuted Gandhi Ji.

Dedication with sincerity brings utmost pleasure in life. Evidently this has been my perception and the Arya Samaj Movement has had profound effects on my mind since my teenage.

It was around 1943, that is 72years ago, that for the first time I visited the Arya Sabha headquarters in Port Louis known at that time by the name of Arya Paropkarini Sabha. It was my father accompanied by my maternal uncles, who brought me there to visit the society. I have only a dim remembrance of the visit as I was only of eight years old. We entered the hall, I saw several persons chatting among themselves. Sermons were pronounced by learned persons and songs sung by bhajniks. We were eager to listen to the speeches of Pt. Kashinath Kistoe whose name at that time was on the lips of one and all, not only in Port Louis but in the villages as well. Panditji being a staunch Arya preacher, went to preach in every nook and corner of the island. He also came to Riviere du Rempart and in his very presence an Arya Samaj Branch was established in the village. The society got dissolved years later. As I was very much inspired by the Vedic Principles, I, with the help of Mr. Pandey Lochun, Mr. Sonalal Koreemun, Pt. SoogrimImrith and others, founded the Riviere du Rempart Arya Samaj in the presence of late Pt. Ramlagan Ramroop and Pt. Ramdeo Ramroop in 1984. The Samaj still exists and it has as President the son of one of the founder of Riviere du Rempart Samaj, Mr. Vivekanand Lochun, who is actually one of the office bearers of Arya Sabha. I am the secretary of the society and Honorary President of Arya Zila Parishad, Riviere du Rempart.

I have certainly devoted most of my time in Arya Samaj Movement. I frequent the Arya Sabha since 1963 when I was appointed by the Vidya Samitiy as inspector and examiner in the evening Arya Hindi Schools run by Arya Sabha. I have worked as Inspector in three districts: Flacq, Riviere du Rempart and Pamplemousses for over half a century. Truly this is an unprecedented feat never accomplished by any other inspector.

I have been the Secretary of Aryodaye Press Samiti for over 15years and also the co-editor of Aryodaye. I still help to do the proof readings of the printed scripts. I have been contributing articles to Aryodaye in Hindi, French and English languages for the last 50 years. I have had the occasion to work with the late staunch Arya Samajists like Shri Mohunlal Mohithji, Shri Ramlal Goomanyji, Shri Harilal-Chooroomooneeji, Shri Sookhoo Rampersadji, Shri Moolshankar Randoneeji and Shri Juskurun Mohithji. They are no more but they have left an undelible impression in my mind.

I am proud to confess, on the occasion of my 80th Birth Anniversary, that I am a product of Arya Samaj, having acquired worldwide fame as a competent Writer, Poet, Historian and Editor for which I have been honoured in India with titles like Doctor, Vishwa Hindi Shiromanee, Saraswat Samman.

Vedas and Vedanta, Concepts and Misunderstandings

cont. from pg1

They are known to be 'Apaurusheya' or not composed by man but of divine origin and revealed. Hence it is difficult to establish the real age of the Vedas.

The fact that western orientalists and philosophers like Schaupenhauer and Romain Roland have been mostly influenced by the Upanishads that are written in recent modern Sanskrit and therefore more easily understood, has promoted the philosophy of the Vedanta amongst recent seekers of oriental knowledge much more than Vedic philosophy. The Upanishads that are commentaries and expositions on the Vedas, are replete with wisdom, and one has to understand the context and the state of mind at that time of the religious and philosophical commentators in order to grasp the real meaning behind the statements therein.

The Vedas being in classical Sanskrit were difficult to interpret, and could hardly be properly understood by many Indians and the more so by later Western scholars. Early attempts to understand the Vedas adopted a set of rules on how to determine a point, and interpret the mantras, in what we call the **'Mimamsas'.** The earlier portion of the Vedas, i.e. the Mantra, followed later by the **Brahmanas, forms the karmakaanda.** The various expositions on the Vedas, known as the Upanishads, form the **jnyanakanda.** While karmakaanda deals with action, rituals and sacrifices, the jnyanakanda deals with knowledge of what reality can be, as understood by the philosophers. Mimamsa dealing with the early portions of the Vedas is called **Purva-Mimamsa.** That dealing with the knowledge part is referred to as **Uttara-Mimaamsa**, and is the basis of **Vedanta**. The former deals with dharma and our duties based on action, and the latter with speculative knowledge on the reality of the Brahman.

It is unfortunate that some philosophers have given too much of importance to the one or the other, proposing the supremacy of action over knowledge, or vice-versa, while the best ones have proposed a combination of Knowledge and Action, known as **'Karma-Jnyana-Samuchchaaya-Vaada'**. Sages like Jaimini and those who followed him up to Badarayana have professed that Karma or Action and Upaasana or Meditation were absolutely essential to 'hasten the dawn of true knowledge'. A critical study of both Purva-Mimaamsa and Uttara Mimamsa is necessary for the understanding of Hinduism with its so many schools of thought and practice.

.....to be continued

DAV COLLÈGE de MORC. ST ANDRÉ

Le DAV COLLÈGE de MORC. ST ANDRÉ se distingue à un concours national !

L'art du parler était à l'honneur le 3 juillet 2015 dernier au Tamil League de Réduit, pour le concours National d'élocution organisé par le Ministère de la jeunesse et du sport. En effet, plusieurs collèges du pays venant de tous les districts, se sont affrontés sur scène sur des sujets divers et d'actualités. Le Collège DAV de Morc. St André était aussi de la partie et s'est même vu distingué lors de cette compétition, le participant Conrad Thummadoo a obtenu le deuxième prix, pour la catégorie française du concours. Il a donc devancé des collèges dits élites de l'île et s'aligne parmi les trois premiers de sa catégorie, devant le Queen Elizabeth Collège notamment. Pour rappel, il avait aussi remporté le premier prix au niveau régional pour le district de Pamplemousses avant d'aller représenter le collège au niveau national. Cette deuxième place fait la fierté de tout le collège, d'autant plus que la compétition était rude. Cependant, il faut dire que c'est avec grande conviction que Conrad Thummadoo a pris le micro pour débattre sur la thématique du divorce lors du concours. Par ailleurs, sa prestation, la maîtrise de son texte et son aisance sur scène surtout, n'ont pas laissé le jury insensible. Ceci vient confirmer une fois de plus, que le DAV Collège de Morc. St André est sur la bonne voie. Parours à suivre donc !

"It's not the winning, but the participation, not the triumph, but the struggle that counts…….. ."

The Ramakrishna Mission is an Indian religious organization which forms the core of a worldwide spiritual movement. The whole ideology of Ramakrishna Math and Mission, formulated by Swami Vivekananda is 'Atmamno Mokshartham jagat hitaya cha…' For one's own salvation and for the welfare of the world.'

Annually the Ramakrishna Mission organizes various competitions as it firmly believes that a country does not only need material prosperity but also a strong foundation of character.

Bearing this in mind this year DAV College, Morcellement Saint Andre had sent students to participate in the various competitions- elocution contest, essay competition, and recitation competition organized by the Ramakrishna Mission. Different colleges throughout Mauritius participated among which there were Queen Elizabeth College, Mauritius College and many others. Our college which is a jewel in the North had the honour to win the second and third prize in the recitation and essay writing competition respectively.

One of our participant namely, Ramjheetun Asheeta Devi of form IV was ranked second in the recitation competition and Langtoo Tejh Kumar of form V was ranked third in the essay competition entitled-" Have faith in yourself, all power is within you, be conscious and bring it out." Explain the message of Vivekananda on faith and power and how the youth can draw inspiration to lead a meaningful life.

DAV College, Morcellement Saint Andre also believes not only an academic development but also on character building and spiritual development of an individual.

The objective of such competitions is to inculcate the character building teachings of Swami Vivekananda among youngsters so that they can grow to become noble citizens of our motherland.